पद्य

नींद में सपना बन अज्ञात!
गुदगुदा जाते हो जब प्राण,
ज्ञात होता हँसने का मर्म
तभी तो पाती हूँ यह जान,
प्रथम छूकर किरणों की छाँह
मुस्कराती कलियाँ क्यों प्रात,
समीरण का छूकर चल छोर
लौटते क्यों हँस हँस का पात!
प्रथम जब भर आतीं चुपचार
मोतियों से आँखें नादान
आँकती तब आँसू का मोल
तभी तो आ जाता यह ध्यान,
घुमड़ फिर क्यों रोते नव मेघ
रात बरसा जाती क्यों ओस,
पिघल क्यों हिम कर उर अवदात
भरा करता सरिता के कोष!
मधुर अपने स्पन्दन का राग
मुझे प्रिय जब पड़ता पहिचान!
ढूँढती तब जग में संगीत
प्रथम होता उर में यह भान,
वीचियों पर गा करूण विहाग
सुनाता किसको पारावार,
पथिका सा भटका फिरता बात
लिए क्यों स्वरलहरी का भार!

कवियत्री– महादेवी वर्मा

पद्य (एक-महिना)

यह धरती है उस किसान की
जो बैलों के कन्धों पर
बरसात घाम में,
जुआ भाग्य का रख देता है,
खून चाटती हुई वायु में,
पैनी कुसी खेत के भीतर,
दूर कलेजे तक ले जाकर,
जोत डालता है मिट्टी को,
पाँस डालकर,
और बीज फिर बो देता है
नये वर्ष मे नयी फसल के।
ढेर अन्न का लग जाता है।
यह धरती है उस किसान की।
नहीं कृष्ण की,
नहीं राम की,
नहीं भीम, सहदेव की, नकुल की,
नहीं पार्थ की,
नहीं राव की, नहीं रंक की,
नहीं तेग, तलवार, धर्म की
नहीं किसी की, नहीं किसी की
धरती है केवल किसान की।
सूर्योदय, सूर्योस्त असख्यों
सोना ही सोना वरसाकर
मोल नहीं ले पाये इसको,
भीषण बदल।
आसमान में गरज–गरज कर
धरती को न कभी हर पाये,
प्रलय सिन्धु में डूब–डूबकर
उभर–उभर आयी है ऊपर।

(7)

भूचालों –भूकम्पों से यह मिट न सकी है।
यह धरती है उस किसान की,
जो मिट्टी का पूर्ण पारखी,
जो मिट्टी के संग साथ ही,
तपकर,
गलकर,
जीकर,
मरकर,
खपा रहा है जीवन अपना,
देख रहा है मिट्टी में सोने का सपना,
मिट्टी की महिमा गाता
मिट्टी के ही अंतस्तल में,
अपने तन की खाद मिलाकर ,
मिट्टी को जीवित रखता है,
खुद जीता है।
यह धरती है उस किसान की!

कवि–केदरानाथ अग्रवाल